7. धार्मिक एवं सांस्कृतिक महोत्सव

(RELIGION AND CULTURAL FESTIVALS)

7.1. महामस्तकाभिषेक

(Mahamastakabhisheka)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में राष्ट्रपति ने कर्नाटक के **श्रवणबेलगोला** में **महामस्तकाभिषेक** का शुभारम्भ किया। यह सम्पूर्ण विश्व के जैन समुदाय का सबसे बड़ा समारोह है।

महामस्तकाभिषेक

- यह दिगम्बर जैन परंपरा के अनुसार प्रत्येक 12 वर्षों के पश्चात किया जाने वाला बाहुबली का **मस्तक अभिषेक समारोह** है।
- गोमतेश्वर की प्रतिमा 24 जैन तीर्थंकरों में से प्रथम तीर्थंकर **ऋषभनाथ** के पुत्र बाहुबली को समर्पित है।
- प्रतिमा को कायोत्सर्ग मुद्रा में दर्शाया गया है। कायोत्सर्ग का अर्थ है 'भौतिक सुख और शारीरिक गतिविधियों का त्याग', अर्थात्; खड़ी या किसी अन्य मुद्रा में स्थिर रहना तथा आत्मा की यथार्थ प्रकृति पर ध्यान केन्द्रित करना।
- ऐसा कहा जाता है कि इस प्रतिमा का निर्माण 10वीं शताब्दी ई. के उत्तरार्ध में **गंग राजा रचमल्ल** के प्रधानमंत्री एवं प्रधान सेनापति **चामुण्डाराय** द्वारा करवाया गया था।

श्रवणबेलगोला के बारे में

- चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल के दौरान पड़े एक भीषण अकाल के कारण जैन भिक्षुओं के एक समूह ने **भद्रबाहु** के नेतृत्व में उज्जैन से श्रवणबेलगोला की ओर प्रवास किया था।
- प्रवास करने वाले जैन भिक्षुओं के इस समूह को **दिगंबर** (नग्न या आकाश ही जिनका वस्त्र है) कहा गया तथा जो जैन भिक्षु **स्थूलभद्र** के नेतृत्व में उत्तर में ही रह गए, वे श्वेताम्बर (जो श्वेत वस्त्र धारण करते हैं) कहलाए।
- तत्पश्चात चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने पुत्र बिन्दुसार के पक्ष में सिंहासन त्याग दिया तथा अपने जीवन के अंतिम दिनों को श्रवणबेलगोला में व्यतीत करने का निर्णय लिया।

जैन धर्म

- जैन धर्म में माना जाता है कि किसी व्यक्ति को आत्मा(जीव) की शुद्धता और ज्ञान प्राप्ति के क्रम में सांसारिक इच्छाओं पर विजय प्राप्त करना अनिवार्य है। यह बौद्ध धर्म के नास्तिक विश्वास की भांति है अर्थात् यह ईश्वर की परम शक्ति पर विश्वास नहीं करता है।
- इसने जाति-व्यवस्था को पूर्ण रूप से अस्वीकृत नहीं किया।
- यह प्राचीन धर्म 24 तीर्थंकरों/आचार्यों (जिन) पर विश्वास करता है। प्रथम जैन तीर्थंकर ऋषभदेव या ऋषभनाथ थे।
- 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ और अंतिम तीर्थंकर वर्धमान महावीर (जन्म वैशाली के निकट कुंडग्राम में 540 ईसा पूर्व में) थे।
- महावीर को जृम्भिक ग्राम में साल वृक्ष के नीचे कैवल्य (ज्ञान) प्राप्त हुआ।
- जैन धर्म के तीन सिद्धांत या त्रिरत्न हैं
    - सम्यक् दर्शन
    - सम्यक् ज्ञान
    - सम्यक् आचरण जिसमें पञ्च महाव्रत शामिल हैं: अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी नहीं करना), अपरिग्रह (संपत्ति का अधिग्रहण नहीं) और ब्रह्मचर्य (संयम)।
- जैन धर्म के अनुयायियों ने शिक्षण के लिए संस्कृत की अपेक्षा प्राकृत (सामान्य भाषा) का उपयोग किया। जैनों द्वारा प्राकृत के अपनाने से इस भाषा और साहित्य का विकास हुआ।
- प्रथम जैन परिषद का आयोजन तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में पाटलिपुत्र में किया गया था। इसकी अध्यक्षता स्थूलबाहू ने की थी।

- जैन साहित्य को जैन आगम कहा जाता है। वे महावीर की शिक्षाओं पर आधारित कुल 45 ग्रंथ हैं और इन्हें 6वीं शताब्दी ईस्वी में गुजरात के वल्लभी में संकलित किया गया था। जैन साहित्य में महाकाव्य, पुराण, उपन्यास और नाटक शामिल हैं। जैन लेखन का एक बड़ा भाग अभी भी पांडुलिपियों के रूप में उपस्थित है, जो प्रकाशित नहीं हुआ है। यह गुजरात और राजस्थान के जैन मंदिरों में पाया जाता है।
- जैनियों द्वारा उत्कृष्ट मंदिरों का निर्माण भी करवाया गया। एहोल और बादामी की शैलोत्कीर्णित गुफाओं का निर्माण चालुक्य काल के दौरान किया गया था। इन गुफाओं में जैन तीर्थंकरों की आकृतियां बनी हुई हैं। 11वीं से 13वीं सदी के मध्य चालुक्य राजवंश के राजाओं द्वारा माउंट आबू में दिलवाड़ा के जैन मंदिरों का निर्माण कराया गया था। एलोरा में पाँच जैन गुफाएं हैं। अन्य गुफाओं में उदयगिरी में बाघ की गुफा और पुडुकोट्टई में सित्तनवासल गुफा शामिल है।

7.2. कंधई जात्रा

(Kandhei Jatra)

सुर्ख़ियों में क्यों?

कंधई जात्रा, ओडिशा के बेहरामपुर में एक विशिष्ट वार्षिक खिलौना मेले के रूप में मनाया जाता है।

कंधई जात्रा के विषय में

- यह त्योहार प्रति वर्ष हिंदूओं के श्रावण माह की पूर्णिमा की रात में मनाया जाता है, जिसे गुरु पूर्णिमा के रूप में भी मनाया जाता है।
- यह त्योहार अनुष्ठान की दृष्टि से **प्राचीन जगन्नाथ मंदिर** से संबद्ध है। त्योहार में पूर्णिमा की रात में मंदिर में भगवान जगन्नाथ के मूर्तितल को पौराणिक पात्रों को चित्रित करने वाले मिट्टी के खिलौनों से सजाया जाता है।

7.3. ठकुरानी जात्रा महोत्सव

(Thakurani Jatra Festival)

यह क्या है?

- हाल ही में, बहरामपुर शहर में महीने भर चलने वाला ठकुरानी जात्रा महोत्सव संपन्न हुआ।

यह महोत्सव **बहरामपुर (सिल्क सिटी), ओडिशा** में मनाया जाता है।

- **इस महोत्सव के बारे में**
- **यह एक द्विवार्षिक महोत्सव है।**
    - इसे घट यात्रा (**Ghata Yatra**) के रूप में भी जाना जाता है। यह दक्षिणी ओडिशा का मुख्य त्योहार है।
    - इस महोत्सव में **माँ बुद्धि ठकुरानी** की पूजा की जाती है। इन्हें बहरामपुर शहर की इष्ट देवी और *सुरक्षा कवच* (संरक्षक) माना जाता है।
    - इस देवी की पूजा मूलतः *डेरा* नामक बुनकर समुदाय द्वारा की जाती थी।

7.4 मेडारम का जातरा

(Medaram's Jatara)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- केंद्र सरकार द्वारा इस वर्ष **मेडारम सम्मक्का- सरक्का/सारलम्मा जातरा** को **राष्ट्रीय स्तर का त्योहार** घोषित किए जाने की संभावना है।

मेडारम, एटुरनगरम वन्यजीव अभयारण्य में एक दूरस्थ स्थान है। यह अभयारण्य दंडकारण्य का एक हिस्सा है, जो दक्कन का सबसे बृहत् उपस्थित (शेष बचा हुआ) वन क्षेत्र है।

महोत्सव के बारे में

- यह प्रत्येक दो वर्ष में **तेलंगाना** के **मेडारम** गाँव में दो देवियों- **सम्मक्का** और उनकी पुत्री **सरक्का** के सम्मान में आयोजित किया जाता है।
- यह महोत्सव इस क्षेत्र के वन में निवास करने वाली **कोया जनजाति** द्वारा आयोजित किया जाता है। यह गैर-आदिवासियों को आकर्षित करने वाला एशिया का सबसे बड़ा आदिवासी त्यौहार है।

नेशनल टैग का महत्व

- नेशनल टैग मेडारम पर्व को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्रदान करने के अतिरिक्त इसे केंद्रीय निधि प्राप्त करने के योग्य बना देगा।
- एक बार राष्ट्रीय त्यौहार घोषित किए जाने के बाद जातरा को यूनेस्को के 'मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत' में शामिल करने पर विचार किया जा सकता है।
- केंद्र सरकार ने 2015 में **'वनज'** को राष्ट्रीय उत्सव घोषित किया था, जो नृत्य और संगीत का एक आदिवासी उत्सव है

7.5. कावेरी महापुष्करम

(Cauvery Maha Pushkaram)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- हाल ही में, कावेरी नदी के तट पर महापुष्करम त्यौहार आयोजित किया गया।

महापुष्करम के संबंध में

- पुष्करम नदियों की पूजा करने का भारतीय त्योहार है। भारत में 12 नदियों के तटों पर इसे मनाया जाता है।
- यह उत्सव 12 वर्षों में एक बार प्रत्येक नदी के तट पर प्रति वर्ष मनाया जाता है। प्रत्येक नदी किसी एक राशिचक्र से संबंधित होती है। प्रत्येक वर्ष इस त्यौहार के लिए उस नदी का चयन किया जाता है जिस राशिचक्र में बृहस्पति स्थित होता है।
- गंगा, नर्मदा, सरस्वती, यमुना, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, भीमा, ताप्ती, तुंगभद्रा, सिंधु और प्राणहिता ऐसी 12 नदियां हैं, जिन पर पुष्करम मनाया जाता है।
- हिंदू पंचांग में कन्या राशि से तुला राशि में बृहस्पति ग्रह के खगोलीय पारगमन को महापुष्करम की अवधि कहा जाता है। यह खगोलीय घटना 144 वर्षों में एक बार होती है।

7.6. वारी वारकरी

(Wari Warkari)

सुर्ख़ियों में क्यों?

विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर बनाए गए वारी के आभासी संस्करण (वर्चुअल वर्शन) ने काफी समर्थन जुटाया है तथा सामाजिक लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायता की है।

वारी के विषय में

- वारी का अर्थ "तीर्थयात्रा" है तथा यह महाराष्ट्र के शोलापुर जिले में स्थित पंढरपुर के विठोबा मंदिर तक की जाने वाली वार्षिक पदयात्रा को संदर्भित करती है। यह एक 700 वर्ष पुरानी परंपरा है।
- विठोबा, कृष्ण (जो कि विष्णु के एक अवतार हैं) का एक रूप है। इस प्रकार, वारकरी वैष्णववाद की एक शाखा है।
- वारकरी (तीर्थयात्री) विभिन्न संतों, विशेषकर ज्ञानेश्वर एवं तुकाराम की पादुकाओं को साथ लेकर चलते हैं।
- यह भौगोलिक दृष्टि से मुख्यतः महाराष्ट्र एवं दक्षिणी कर्नाटक से संबंधित है। पदयात्रा करने वाले व्यक्तियों को वारकरी अर्थात् तीर्थयात्री कहा जाता है।

- इस तीर्थयात्रा का समापन हिंदू चंद्र कैलेंडर के आषाढ़ माह की एकादशी (11वें दिन) को होता है।
- अपने इतिहास के माध्यम से आंदोलन को स्थापित करने तथा समर्थन देने हेतु उत्तरदायी शिक्षकों में ज्ञानेश्वर, तुकाराम एवं चोखमेला सम्मिलित हैं।

नंदा देवी राजजात यात्रा (हिमालयी महाकुम्भ)

- यह उत्तराखंड का एक त्यौहार है जिसमें भगवती नंदा देवी (गढ़वाल प्रभाग में गौरा एवं राज राजेश्वरी के नाम से प्रसिद्ध) की पूजा की जाती है।
- यह पूरे तीन सप्ताह तक मनाया जाता है तथा इसका आयोजन गढ़वाल क्षेत्र के **चमोली** जिले में प्रत्येक **बारह** वर्षों के अंतराल पर किया जाता है।

7.7 लोसर त्योहार

(Losar Festival)

सुर्ख़ियों में क्यों?

नव वर्ष के उत्सव का आरंभ करने वाला लोसर त्योहार लद्दाख में मनाया गया।

लोसर त्योहार के संदर्भ में

- इस त्योहार (जिसका उद्गम 15वीं सदी में माना जाता है) में लद्दाखी या तिब्बती नव वर्ष को मनाया जाता है।
- यह 3 से 15 दिनों तक चलता है और तिब्बती चंद्र कैलेंडर के 11वें माह के पहले दिन से इसे मनाने की शुरुआत होती है।
- लद्दाख के अतिरिक्त, इसे **हिमाचल प्रदेश के लाहौल और स्पीति में, अरुणाचल प्रदेश के तवांग तथा सिक्किम में** भी मनाया जाता है।
- लोसर में विशेष रूप से नृत्य, संगीत और आनंद की एक सामान्य भावना रहती है। इस उत्सव में देवताओं को गोम्पा तथा उनके तीर्थस्थलों में चढ़ावा अर्पित किया जाता है।

भारत भर में अन्य नव वर्ष संबंधी उत्सव

- उगाडी - तेलगू नव वर्ष
- गुड़ी परवा - मराठी नव वर्ष
- बैसाखी - पंजाबी नव वर्ष
- पुथंडु - तमिल नव वर्ष
- बोहाग बिहू - असमिया नव वर्ष
- पोहेला बोइशख - बंगाली नव वर्ष
- बेस्तु वरस - गुजराती नव वर्ष
- विशु - मलयाली नव वर्ष
- हिजरी - इस्लामी नव वर्ष
- लोसोंग - सिक्किमी नव वर्ष
- चेटी चंद - सिंधी हिंदुओं के लिए हिंदू नव वर्ष

7.8 नबकलेबर त्योहार

(Nabakalebar Festival)

सुर्ख़ियों में क्यों?

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने नबकलेबर त्योहार के अवसर पर 1000 रुपये और 10 रुपये के स्मारक सिक्के जारी किए।

नबकलेबर त्योहार के संदर्भ में

- पुरी में श्री जगन्नाथ मंदिर में मनाया जाने वाला नबकलेबर एक सामयिक उत्सव है। नब का अर्थ है नया और कलेबर का आशय शरीर से है।
- जगन्नाथ संप्रदाय में यह जगन्नाथ, बलभद्र, सुभद्रा और सुदर्शन की लकड़ी की छवियों का समय- समय पर किया जाने वाला नवीनीकरण है।
- आत्मा या ब्रह्म को पुरानी मूर्तियों से उनके नए शरीर में एक अत्यधिक निर्धारित तकनीकी एवं गुप्त विधि से स्थानांतरित किया जाता है।
- नबकलेबर त्यौहार 12 से 19 वर्षों के अंतराल पर मनाया जाता है।
    - इस महोत्सव के दौरान वार्षिक रथयात्रा नबकलेबर रथ यात्रा बन जाती है।

7.9 जल्लीकट्टू

(Jallikattu)

- यह तमिलनाडु में प्रचलित बैल को नियंत्रित करने का समारोह (bull-vaulting event) है, जिसे मट्टू पोंगल दिवस पर पोंगल महोत्सव के एक भाग के रूप में मनाया जाता है।
- प्रतिभागी एक अखाड़े में बैल को उसके कूबड़ द्वारा नियंत्रित करते हैं और जब तक वे अंतिम रेखा पार नहीं कर लेते तब तक उसके कूबड़ पर लटके रहने का प्रयास करते हैं।
- यह मदुरै, तिरुचिरापल्ली, थेनी, पुदुक्कोट्टई और डिंडीगुल जिलों (जिसे जल्लीकट्टू बेल्ट के रूप में भी जाना जाता है) में लोकप्रिय है।
- यह एक प्राचीन खेल है। संगम साहित्य (ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी से लेकर दूसरी शताब्दी ईसवीं तक) में ईरु थाजुवुथल (बैल को गले लगाने) के कई विस्तृत संदर्भ मिलते हैं।
- वर्तमान में, पशु क्रूरता निवारण (तमिलनाडु संशोधन) अधिनियम, 2017, राज्य में जल्लीकट्टू के संदर्भ में उच्चतम न्यायालय द्वारा प्रतिबंध लगाने हेतु दिए गए पहले के फैसले को रद्द करता है।
- अब यह निर्णय लेने के लिए संवैधानिक पीठ की स्थापना की गई है कि क्या अनुच्छेद 29 (1) के अंतर्गत कोई राज्य अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए इस कानून को लागू कर सकता है।

भारत में पशुओं से संबंधित अन्य खेल

- **कंबाला:** तटीय कर्नाटक में वार्षिक रूप से आयोजित नर भैसों की दौड़।
- **मुर्गा-लड़ाई:** संक्रांति के दौरान आंध्र प्रदेश में लोकप्रिय दो मुर्गों के मध्य करवाया जाने वाला खूनी खेल (ब्लड स्पोर्ट)।
- **बैलगाड़ी शर्यत:** महाराष्ट्र में होने वाली बैलगाड़ी (कार्ट) दौड़।
- **ऊंट रेस:** राजस्थान में पुष्कर मेले के दौरान।
- **बुलबुल फाइट:** प्रत्येक मकर संक्रांति के दौरान असम में हयाग्रिव-माधव मंदिर में।

7.10. अंबुबाची महोत्सव

(Ambubachi Festival)

- यह कामाख्या मंदिर, गुवाहाटी (असम) के सबसे महत्वपूर्ण त्यौहारों में से एक है।
- इसे प्रत्येक वर्ष मॉनसून ऋतु के दौरान मनाया जाता है और साथ ही अंबुबाची मेले का भी आयोजन किया जाता है।
- कामाख्या मंदिर, देवी शक्ति की 52 शक्ति पीठों में से एक है।
- यह तांत्रिक संप्रदाय के साथ जुड़ा हुआ है तथा इस त्यौहार को "पूर्व का महाकुंभ" भी कहा जाता है।

7.11. चपचार कुट

(Chapchar Kut)

- चपचार कुट मिजोरम का एक त्योहार है जिसका शाब्दिक अर्थ है- एक ऐसा त्योहार जिसका आयोजन उस अवधि में किया जाता है जब झूमिंग के लिए जलाने हेतु काटे गए बांस और वृक्षों के सूखने की प्रतीक्षा की जा रही होती है।
- यह झूम के अंतर्गत भूमि सफाई का कार्य समाप्त होने तथा खेत को बुआई के लिए तैयार करने का प्रतीक है। उत्सवधर्मिता की यह भावना मार्च में तीन से सात दिनों तक रहती है।

- चपचार कुट त्यौहार का विकास 1450 -1600 A.D के मध्य हुआ। पारंपरिक पोशाक परेड तथा चेराव, चाई, चैलम्, सरलंकाई जैसे नृत्यों का प्रदर्शन और समूहों द्वारा संगीतमय प्रस्तुतियां इस समारोह का हिस्सा हैं।

7.12. नार्थ-ईस्ट कॉलिंग फेस्टिवल

(North East Calling Festval)

सुर्खियों में क्यों?

हाल ही में उत्तर पूर्वी क्षेत्र विकास मन्त्रालय (MoDNER) के राज्य मंत्री ने नॉर्थ-ईस्ट कॉलिंग फेस्टिवल का उद्घाटन किया।

गन्तव्य पूर्वोत्तर (Destination North East)

- यह एक ऐसा कार्यक्रम है, जिसका आयोजन पूर्वोत्तर क्षेत्र के प्रोन्नयन (प्रमोट) हेतु किया जाता है। इस प्रोन्नयन में व्यवसायिक सम्मेलनों, प्रदर्शन स्टालों के माध्यम से उत्तर-पूर्व की सर्वोत्तम विशेषताओं का प्रदर्शन किया जाता है और यह पर्यटन, कौशल, स्टार्ट अप, हथकरघा और हस्तशिल्प, बागवानी, औषधियों और सुगंधित पौधों में निवेश आकर्षित करने के उद्देश्य पर आधारित है

क्या है यह त्यौहार:

- पूर्वोत्तर भारत की **कला, संस्कृति, विरासत, व्यंजन, हस्तशिल्प, व्यवसाय और पर्यटन** के प्रोन्नयन हेतु "नॉर्थ-ईस्ट कॉलिंग फेस्टिवल" का आयोजन किया जाता है।
- इस त्यौहार या फेस्टिवल का आयोजन MoDNER के "**गन्तव्य पूर्वोत्तर"** द्वारा किया गया है।
- इस अवसर पर निम्नलिखित का भी शुभारम्भ किया गया:
  - पूर्वोत्तर क्षेत्र में युवा उद्यमियों के लिए MoDNER और **पूर्वोत्तर विकास वित्त निगम** के संयुक्त उद्यम के रूप **नॉर्थ-ईस्ट वेंचर फंड**।
  - पूर्वोत्तर भारत में **संधारणीय पर्यटन** के प्रोन्नयन के उद्देश्य से **पूर्वोत्तर विकास परिषद।**

नार्थ ईस्ट डेवलपमेंट फाइनेंस कारपोरेशन

- अगस्त 1995 में कम्पनी अधिनियम 1956 के अंतर्गत पंजीकृत एक पब्लिक लिमिटेड कम्पनी है।
- यह भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में औद्योगिक, आधारिक संरचना और कृषि सम्बन्धित परियोजनाओं की स्थापना के लिए सूक्ष्म, लघु, मध्यम और बड़े उद्यमों को वित्तीय सहायता प्रदान करती है तथा MFI/NGOs के माध्यम से माईक्रोफाइनांस भी करती है।

7.13 हॉर्नबिल त्योहार

(Hornbill Festival)

सुर्खियों में क्यों?

- हाल ही में, **नागालैंड** में दिसंबर माह के आरंभ में **हॉर्नबिल त्योहार** मनाया गया।

भारत में हॉर्नबिल

भारत में हॉर्नबिल की नौ विभिन्न प्रजातियाँ निम्न स्थलों पर पायी जाती हैं:

- पश्चिमी घाट: इंडियन ग्रे हार्नबिल, मालाबार ग्रे हार्नबिल, मालाबार पाइड हार्नबिल, ग्रेट हॉर्नबिल (केरल का राज्य पक्षी)
- नारकोंडम आइलैंड: नारकोंडम हार्नबिल (इन्डैन्जर्ड)
- अन्य पूर्वोत्तर एवं हिमालयी तलहटी में : वाइट-थ्रोटेड ब्राउन हार्नबिल, रूफस-नेक्ड हार्नबिल (वल्नरेबल), रीथड (Wreathed) हार्नबिल, ऑरीएन्टल पाइड हार्नबिल।

त्योहार के विषय में

- यह त्योहार नागालैंड के **श्रद्धेय पक्षी हॉर्नबिल** के नाम पर मनाया जाता है। यह त्योहार नागालैंड की स्थानीय जनजातियों का उत्सव माना जाता है।
- इसे नागालैंड के राज्य पर्यटन और कला एवं संस्कृति विभाग द्वारा आयोजित किया जाता है।

- इस त्योहार को प्रथम बार सन 2000 में मनाया गया था। इसके बाद से यह प्रत्येक वर्ष मनाया जाता है।
- यह पारंपरिक संगीत, नृत्य और खेल के माध्यम से **नागा संस्कृति की सशक्त प्रस्तुतीकरण** है।
- हॉर्नबिल त्योहार को **नागालैंड के राज्य दिवस** के साथ मनाया जाता है

7.14. अरनमुला रेगाटा

(Aranmula Regatta)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- वार्षिक सर्प नौका दौड़ **उथ्रितथी वल्लमकली** का आयोजन पम्पा नदी में अरनमुला, केरल में किया गया।

अरनमुला रेगाटा के संबंध में

- अरनमुला उथ्रितथी वल्लमकली अथवा अरनमुला नौका दौड़ केरल की सर्वाधिक प्राचीन एवं प्रतिष्ठित नौका दौड़ है।
- इस दौड़ हेतु प्रयुक्त की जाने वाली सर्प नौकाओं को पल्लियोडम कहा जाता है।

केरल में अन्य नौका दौड़

- चंपाकुलम मूलम (सर्प) नौका दौड़ - इस सर्प नौका दौड़ का आयोजन अंबलप्पुझा क्षेत्र के श्री कृष्ण मंदिर में कृष्ण मूर्ति की स्थापना वाले पवित्र दिन में किया जाता है। यह चंपाकुलम झील, एलेप्पी में आयोजित की जाती है।
- पाईप्पड नौका दौड़ (जलोत्सवम) - इस नौका दौड़ का आयोजन प्रतिष्ठा समारोह का उद्घाटन करने हेतु अथवा हरिपद सुब्रह्मण्यम मंदिर में भगवान सुब्रह्मण्यम की मूर्ति स्थापना के उपलक्ष्य में किया जाता है। इसका आयोजन पाईप्पड झील, एलेप्पी में किया जाता है।

7.15. सादुल बटुकम्मा

(Saddula Bathukamma)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- तेलंगाना की लगभग 3500 महिलाओं ने सादुल बटुकम्मा के अवसर पर फूलों की सजावट हेतु सबसे बड़ी मानव श्रृंखला बनाने का प्रयत्न किया।

सादुल बटुकम्मा के संबंध में

- यह तेलंगाना की हिन्दू महिलाओं द्वारा मनाया जाने वाला राजकीय पुष्प त्योहार है जो दुर्गा नवरात्रि के दौरान पूरे नौ दिनों तक मनाया जाता है।
- इस 9-दिवसीय त्योहार का समापन दुर्गा अष्टमी के दिन "सद्दुला बटुकम्मा" त्योहार पर होता है।
- इस विशिष्ट त्योहार में पृथ्वी, जल तथा मनुष्यों के मध्य अंतर्निहित संबंधों को मनाया जाता है। पूरे पूर्ववर्ती सप्ताह के दौरान, महिलाएं बटुकम्मा के साथ 'बोद्देम्मा' (मिट्टी द्वारा निर्मित देवी गौरी- माँ दुर्गा की मूर्ति) बनाकर उसे तालाब में विसर्जित कर देती हैं। यह तालाबों को सुदृढ़ करने के साथ-साथ अधिक जल बनाए रखने में सहायता करता है।
- बटुकम्मा खूबसूरत फूलों का एक क्रमबद्ध ढेर है, जहाँ विभिन्न औषधि मूल्य वाले फूलों को अन्य विशिष्ट मौसमी फूलों के साथ सात सकेंद्रित परतों में मंदिर गोपुरम के आकार में व्यवस्थित किया जाता है। तेलुगू में, 'बटुकम्मा' का अर्थ है 'देवी माँ जीवित हो जाओ', जहां देवी महा गौरी- 'जीवन दाता' की बटुकम्मा के रूप में पूजा की जाती है।

7.16. रामकृष्ण आन्दोलन

(Ramakrishna Movement)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- केंद्र सरकार ने दो संगठनों- रामकृष्ण मिशन एवं रामकृष्ण मठ को EPFO कवरेज के अंतर्गत लाने हेतु छूट प्रदान की है।

स्वामी विवेकानंद

- इन्हें 19वीं शताब्दी के अंत में पश्चिमी विश्व में भारतीय दर्शन के वेदांत एवं योग को आरम्भ करने के साथ अंतर्धार्मिक जागरूकता को बढ़ाने तथा हिंदुत्व को विश्व स्तर पर लाने का श्रेय दिया जाता है।
- उनके लेखन एवं भाषणों ने न केवल भारतीयों के मस्तिष्क को आंदोलित किया बल्कि मातृभूमि के प्रति लगाव को भी बढ़ावा दिया। उन्होंने देशवासियों के मस्तिष्क एवं मन द्वारा पूजनीय मातृभूमि को एकमात्र देवी/देवता के रूप में स्थापित किया।
- 1893 में शिकागो में दिए गए भाषण ने उन्हें विश्व धर्म संसद में सबसे महान व्यक्तित्व तथा भारत को धर्मों की माता के रूप में स्थापित किया।

रामकृष्ण आन्दोलन के संबंध में

- रामकृष्ण मिशन एवं रामकृष्ण मठ, रामकृष्ण आंदोलन (वेदांत आंदोलन के रूप में भी जाना जाता है) के आधार का निर्माण करते है।
- रामकृष्ण मठ की स्थापना, रामकृष्ण परमहंस द्वारा कलकत्ता के बेलूर में की गयी थी।
- रामकृष्ण मिशन की स्थापना 1897 में रामकृष्ण परमहंस के शिष्य स्वामी विवेकानंद ने की थी।
- परमहंस ने सभी धर्मों की एकता को स्वीकार करते हुए कहा कि ईश्वर एवं मोक्ष की प्राप्ति हेतु कई मार्ग हैं। स्वामी विवेकानंद ने इन्हीं विषयों पर अपने उपदेश दिए।